डबल डाक्टर बनने का प्रयास करे चिकित्सक-डा शर्मा
वरिष्ठ चिकित्सकों का राष्ट्रीय सम्मेलन प्रारम्भ

माउंट आबू, ७अगस्त। चिकित्सा क्षेत्र में चिकित्सकों को कभी भी अपने पेशे में आनाकानी और बहानेबाजी नहीं करना चाहिए यह निन्दनीय है। आजकल समाज में तेजी से फैल रही बीमारियों की रोकथाम के लिए चिकित्सकों को डबल डाक्टर बनने की जरूरत है। शरीर की बीमारी तो हम ठीक कर लेते हैं परन्तु मन की बिमारी पर अंकुश नही लग पाता है। उक्त उदगाार राजस्थान के चिकित्सा राज्यमंत्री डा. राजकुमार शर्मा ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा ज्ञान सरोवर परिसर में मेडिकल प्रभाग की ओर से वरिष्ठ चिकित्सकों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उदघाटन सत्र में सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा स्वास्थ्य परिभाषा की कसौटी को मूर्तरूप देने के लिए नित नए अनुसंधानों के साथ चिकित्सक मरीजों को आध्यात्मिकता से भी जोड़ने का पुनीत कार्य करें तो व्याधियों को शीघ्र ही नियंत्रण में लाया जा सकता है। तन तन्दरूस्ती के साथ मन को दुरूस्त रखने में वसुधैव कुटम्बकम की विचारधारा के अनुरुप जीवनशैली को परिवर्तन करने की जरूरत है। समाज के हर वर्ग में बढ़ते तनाव के समाधान को प्राचीन भारतीय संस्कृति के सहज राजयोग को अपनाना चाहिए। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है इसलिए

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि अपने को आत्मा समझकर परमपिता परमात्मा शिव निराकार ज्योतिबिंदू का विधिपूर्वक ध्यान करने से आत्मिक शक्ति बढ़ती है जिससे बीमारी के समय भी मनोबल को स्वस्थ बनाए रखना संभव है। परमात्मा की याद से चिंताएं मिट जाती हैं।

पिण्डवाड़ा-आबू विधायक श्रीमती गंगाबेन गरासिया ने कहा कि दवा से ज्यादा दुआ काम करती है, दुआएं से किसी से मांगने से नहीं मिलती, जब दिल से किसी की सेवा की जाती है तो उसके द्वारा स्वत: ही दुआएं दी जाती हैं। आध्यात्मिकता मन का सशक्तिकरण करने के साथ आपसी भाईचारे को सुदृढ़ बनाती है।

मुंबई बीएसईएस अस्पताल निदेशक, प्रसिद्ध केंसर सर्जन डॉ. अशोक मेहता ने कहा कि इच्छा अकांक्षा की तरंगे मानवीय मस्तिषक पर जब तक हावी रहेंगी तब तक वह तनावपूर्ण कष्टमय जीवन व्यतीत करने के लिए विवश रहेगा। आईसीएमआर दिल्ली पूर्व महानिदेशक डॉ. एन. के. गांगुली ने कहा कि मेडिटेशन के माध्यम से मानसिक व शारीरिक संतुलन को बनाया जा सकता है। दृढ़ इच्छा शक्ति से मन को सकारात्मक दिशा देने से कई व्याधियों से सहज ही छुटकारा संभव है।

ग्लोबल अस्पताल निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि बढ़ती व्याधियों से मुकाबला करने को मेडिसन के साथ मेडिटेशन की भी जरूरत है। मनोचिकित्सक डॉ. गिरीशपटेल तथा मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसीलाल शाह सहित अन्य वक्ताओं ने भी सम्मेलन को संबोधित किया।

फोटो केप्शन - ०७एमएबी१ और २ – माउंट आबू। कार्यक्रम का दीप जलाकार उदघाटन करते अतिथि तथा डा शर्मा को ईश्वरीय उपहार भेंट करती दादी हृदयमोहिनी